कुसुमाकर शर्मा गौतम

ई—मेल-kusumakar.sharma@gmail.com

मुर्दे की मौत

दफ्तर जाते समय नुक्कड़ के छोर वाले पुराने जनाश्रम से आते शोर ने मेरा ध्यान खींचा। नजदीक जाकर देखा तो सफेद कपड़े में लपेटी एक लाश पड़ी थी।

“यह किसकी लाश है जनाब?” चेहरे पर शून्य भाव वाले एक जनाश्रामवासी वृद्ध से मैंने पूछा।

“इसने कभी अपना असली नाम नहीं बताया। खुद को मुरदा बुलाता था।” मुझे देखे बिना उन्होंने जवाब दिया।

“हरे शिव! कितनी दुःखदायी जिन्दगी होगी इसकी?” मैने दुःख व्यक्त किया।

गहरी साँस लेते हुए उन्होंने मुझे देखा और बोले, “दुखी तो था। लेकिन बड़े घराने का लड़का था। सुन्दर पत्नी थी। नशीले पदार्थ की लत लग गई। सब पीछे छूट गया। वह अकेला हो गया। क्या खाए? किधर रहे? उसकी समझ के बाहर था। गन्दगी में खाने का सामान ढूँढता था। बहुत अरसे से इधर ही रहता था। कल खून उल्टी किया था। सुबह उसका चोला बदल गया।”

“एक दिन सबको यह धरती छोड़नी पड़ती है। कफन ओढ़ने के बाद सब दुःख-दर्द खत्म हो गये ना उसके?” संवेदना-भरे शब्दों से दुःख जताया मैंने।

अश्रुभरी आँखों से उन्होंने चौंकाने वाली बात कही, “अगर कफन डालने के बाद ही मृत्यु मानी जाती है तो यह उसकी दूसरी मृत्यु है; क्योंकि मर तो वह कब का चुका था।”

हिन्दी अनुवाद : स्वयं लेखक द्वारा

नेपाल के रुकुमकोट रुकुम जिले में जन्मे डा. कुसुमाकर शर्मा गौतम पानी प्रशोधन विशेषज्ञ हैं और एडमन्टन, कनाडा में रहते हैं। वह नेपाली भाषा के एक जाने-माने लघुकथाकार और समीक्षक हैं। उनके दो लघुकथा संग्रह प्रकाशित हैं। यह लघुकथा उनके 'हिउँको राप' लघुकथा संग्रह से ली गई है।